सहमत मुक्तनाद

वर्ष:4 अंक:4-6 अप्रैल-जून 2002

गुजरात का नरसंहार

सहमत तथ्यान्वेषी दल की रिपोर्ट

अरुंधति राय
जनतंत्रः यह किस चिड़िया का नाम है?

मधु प्रसाद
उन्हें मालूम ही नहीं था...

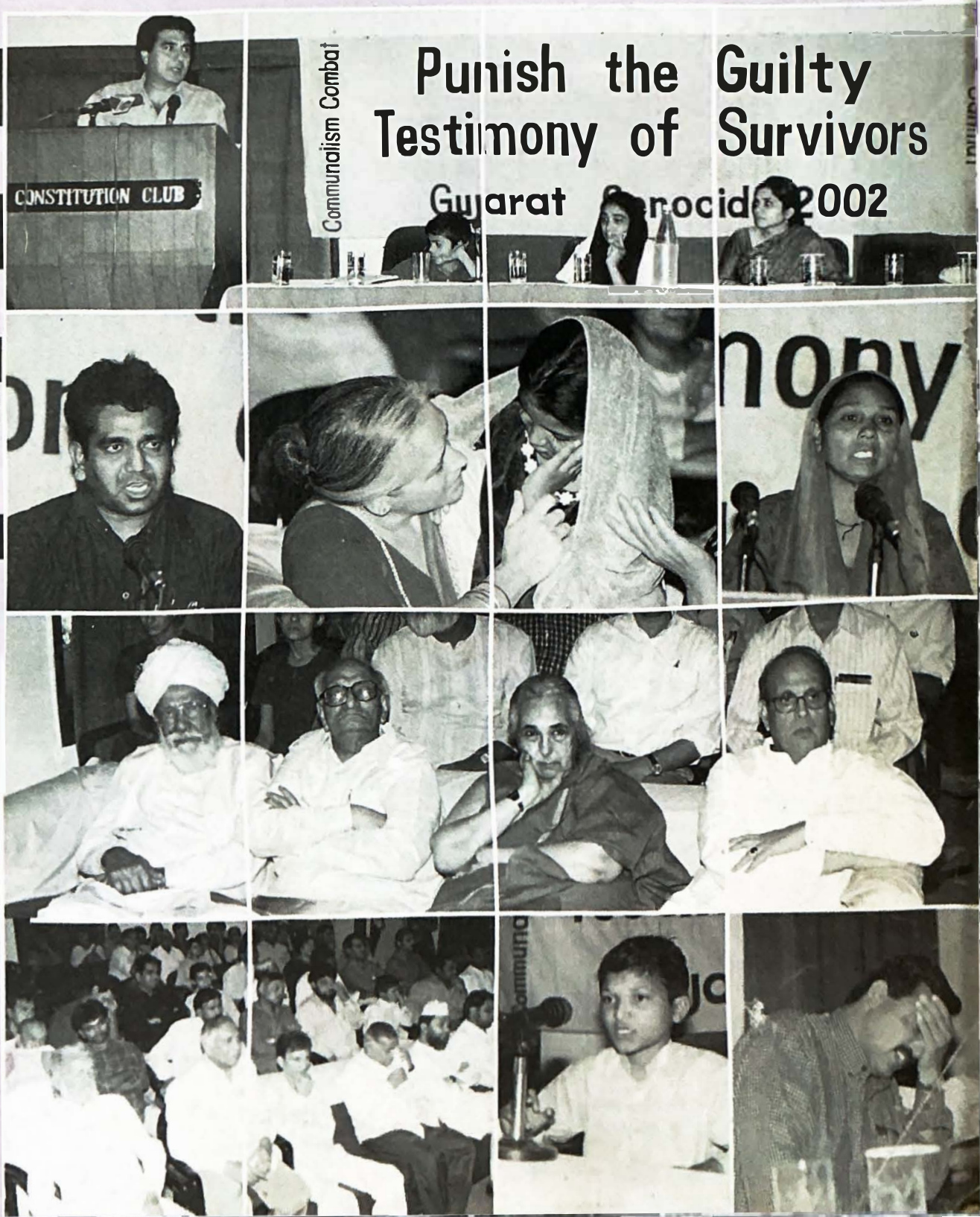

सहमत मुक्तनाद

वर्ष: 4 अंक : 4 - 6

अप्रैल - जून 2002

यह अंक 30 रु.

वार्षिक सदस्यता 150 रु.

संरक्षक मण्डल:

भीष्म साहनी

इरफान हबीब

सुवीरा जायसवाल

हबीब तनवीर

संपादक मण्डल:

के. एन. पणिक्कर

राजेन्द्र प्रसाद

अनिल चौधरी

राजेन्द्र शर्मा

शबनम हाशमी

संपादकीय व प्रबन्ध कार्यालय:

सहमत

8 विट्ठलभाई पटेल हाऊस

रफी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001

फोन: 3711276, 3351424

आवरण: **सहमत और कम्युनलिज्म कंबैट** ने नई दिल्ली में गुजरात के दंगा पीड़ितों की जन सुनवाई आयोजित की। 26-27 अप्रैल को हुयी जन सुनवाई के कुछ दृश्य।

संपादन और प्रकाशन पूर्णत: अवैतनिक टिप्पणियों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिनसे संपादक/प्रकाशक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

सारे भुगतान चैक या बैंक ड्राफ्ट से **सहमत** के नाम से किए जाएं।

अनुक्रम

1 **संपादकीय**
फासीवाद: आज एक प्रदेश कल सारा देश

5 **रवींद्रनाथ ठाकुर**
जे युद्धे भाई के मारे भाई

6 **कात्यायनी की दो कविताएं**
गुजरात-2002 (एक बीहड़ देशकाल की बेहद सपाट कविता) - गुजरात-2002

8 **मंगलेश डबराल की तीन कविताएं**
गुजरात के मृतक का बयान
अंजार - भूलने के विरुद्ध

9 **विष्णु नागर की दो कविताएं**
अब मैं उतना अकेला नहीं हूं
बेचारों का हिंदू राष्ट्र

10 **देवी प्रसाद की दो कविताएं**
शोकगीत - ये क्या जगह है, दोस्तो!

11 **विमल कुमार की दो कविताएं**
एक जलते हुए शहर की यात्रा - गुजरात प्रसंग

14 **कुबेर दत्त**
राग भैरवी ताल कहरवा

15 **कैफी आजमी - बकलम खुद**
और एक दिन सफर खत्म हो जाएगा
दूसरा बनवास

16 **सहमत की तथ्यान्वेषी टीम की रिपोर्ट**
सांप्रदायिक दंगा नहीं अल्पसंख्यकों का सफाया

23 **विष्णु नागर**
गुजरात को कौन बचा सकता है
उसका सब-कुछ लुट चुका लेकिन क्या यह अंत है?
जिस गोधरा में लोग जलकर खाक हुए, वहां बदले की भावना नहीं थी

28 गुजरात नरसंहार: भुक्तभोगियों की गवाहियां

31 **अरुंधति राय**
जनतंत्र: यह किस चिड़िया का नाम है?

38 **मानस दासगुप्त की डायरी**
गुजरात में मोदी राज के बहत्तर घंटे

41 **अंजली मोदी**
राहत, चिकित्सा सहायता सब से वंचित दंगा पीड़ित

43 **दीपल त्रिवेदी**
भाजपा-विहिप के लोगों को बचाने में लगी है मोदी सरकार

44 **राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट**
जिंदगी की रक्षा और विश्वास बहाल करने की जिम्मेदारी गुजरात सरकार की

46 जस्टिस रवानी द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को दी गई याचिका

48 **अहमदाबाद में गीता भट्ट**
विहिप नेता का कहना है, "यह तो करना ही था।"

49 **गीतांजलि श्री**
राम कहां

51 **शबनम हाशमी**
एक अंधेरे प्रदेश में

53 **सुधीर चंद्रा**
ट्रेजेडी के स्वांग: अभी और कितना गिरना बाकी है?

55 **हर्ष मंदर**
'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' अब हम कैसे गा सकेंगे - गुजरात-2002

60 **अमित सेनगुप्ता**
एक कविता आसिफ के लिए

62 **सिद्धार्थ वरदराजन**
गीताबेन, तुम्हें सलाम

64 **के एन पणिक्कर**
गुजरात का भयावह हाल

66 बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने साबरमती ट्रेन में मुस्लिमों को पीटा, जयश्रीराम के नारे लगवाये

67 **अंजली मोदी**
गोधरा की घटना: कुछ सवाल

69 **पीटर पोफम**
नफरत की रेलगाड़ी

71 **राजीव चंद्रन**
उकसावे ने जलवाई ट्रेन

75 **रामसुजान अमर**
गोधरा त्रासदी और संघ परिवार की फासीवादी चालबाजी

77 **मधु प्रसाद**
"वे कुछ नहीं जानते थे फिर भी उन्हें सजा दी गई"

85 **राजदीप सरदेसाई**
सरकार चाहे जो कहे कैमरा सच बोलेगा

86 **बरखा दत्ता**
दंगे के दौरान खबरें

88 सांप्रदायिक आग भड़कने में स्थानीय मीडिया की भूमिका

90 **जयरीमल्ल पारख**
गुजरात में फासीवादी नरसंहार और मीडिया रिपोर्टिंग

95 उन्हें संविधान का दायित्व पूरा करने के लिए दंडित किया गया

98 **राघव**
अपराधियों की जमात
पतन की पराकाष्ठा

101 **राजेंद्र शर्मा**
अपनी केवल हार!

105 **जावेद नकवी**
अहमदाबाद में दंगाइयों ने उर्दू शायर वली दकनी का मजार ढहाया

107 यह तो मानवता की साझा विरासत पर हमला है

109 **अहमदाबाद से मनु जोज़फ द्वारा**
पर का भेदी पर्दा उठाए उर्फ किस्सा मोदी के षड्यंत्र का

फासीवादः आज एक प्रदेश कल सारा देश

गुजरात में पिछले ढाई महीने में जो कुछ हुआ है, वह अल्पसंख्यक मुसलमानों का नरसंहार है, इससे अब शायद ही कोई असहमत होगा। हां! बहुसंख्यक सांप्रदायिकता की राजनीति करने वाले हिंदुत्ववादियों की बात अलग है, जो इस नरसंहार के मुख्य अपराधी हैं। जाहिर है कि पक्के अपराधियों से आसानी से अपना जुर्म मान लेने की उम्मीद कोई कैसे कर सकता है? लेकिन, अल्पसंख्यकों का यह नरसंहार भी तो बिना किसी प्रयोजन के नहीं हो सकता। यह प्रयोजन क्या है? इसके जरिए सबसे बढ़कर गुजरात में, लेकिन वास्तव में कुछ हल्के रंग के साथ ही सही पर देश भर में क्या हासिल करने की कोशिश की जा रही है, इसे पहचानना शायद उतना ही जरूरी है, जितना कि इस नरसंहार को नरसंहार के रूप में पहचानना। फर्नांडीस के बेशर्मी भरे दावे अपनी जगह, ऐसे सभी लोग जिन्होंने अपनी आत्मा बहुसंख्यक सांप्रदायिकता की राजनीति करने वालों के हाथों बेच नहीं दी है, यह मान रहे हैं कि गुजरात में हुई इकतरफा हिंसा अपनी भीषणता तथा भयावहता में, देश के विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान के बीच आबादियों की अदला-बदली के समय हुई सांप्रदायिक हिंसा के बाद, सबसे भयानक हिंसा है। वास्तव में कई लोगों ने तो यह भी ध्यान दिलाया है कि सिर्फ हिंसा के पैमाने को ही न देखें तो, कई मानों में गुजरात की मौजूदा हिंसा विभाजन के समय की सांप्रदायिक हिंसा से भी भयावह नजर आती है। इस सिलसिले में तीन और शायद इस हिंसा के विशेष चरित्र को दर्शाने वाले पहलू, खासतौर पर महत्वपूर्ण हैं। पहला है, मुस्लिम महिलाओं को खासतौर पर बर्बरता का निशाना बनाया जाना। सार्वजनिक तथा बहुत बार सामूहिक बलात्कार के बाद, प्राणघाती हमला और फिर जिंदा जलाना, शायद सांप्रदायिक हिंसा के इतिहास में हिंदू सांप्रदायिकता की ताकतों का नया योगदान माना जा सकता है। दूसरा पहलू है, बड़ी आसानी से इक्के-दुक्के अल्पसंख्यकों का ही नहीं, पूरी बस्तियों की बस्तियों, मोहल्ले के मोहल्लों का शिकार किया जाना। और जाहिर है कि तीसरा पहलू है, इस सांप्रदायिक हिंसा का अनंत काल तक चलने के लिए तैयार दिखाई देना। बेशक, यह सब विभाजन के समय के उस भयावह उन्माद में नहीं था। लेकिन, उसके पीछे विशेष प्रयोजन भी तो नहीं था। और ऐसा प्रायोजन तो बिल्कुल ही नहीं था। जाहिर है कि इसे पहचाने बिना या इसकी पहचान से बचते हुए गुजरात की मौजूदा त्रासदी की बात करना, वास्तव में इसके दोहराए जाने का ही रास्ता तैयार करने में मदद करना है।

बाकायदा इसकी शुरूआत हो भी चुका है। पहले अहमदाबाद में और बाद में बड़ौदा में, जार्ज फर्नांडीज, नरेंद्र मोदी आदि को अगली कतारों में रखकर आयोजित हुए और आगे होने जा रहे शांति मार्च, बेशक इसकी एक अतिवादी भोंडी कोशिश ही माने जाएंगे। फिर भी गुजरात की त्रासदी की ऐसी अमूर्त चिंता का दायरा कहीं बड़ा है, जिसमें इस त्रासदी के शिकार, शिकारी सब की पहचानें गायब हैं, न्याय तथा मानवीय व जनतांत्रिक अधिकारों के सारे सवाल गायब हैं। है तो बस किसी जादू से शांति लौट आने की कामना। इस तरह शांति, सिर्फ शांति और किसी भी कीमत पर शांति की गुहार लगाने वाले सदाकांक्षियों का दायरा काफी बड़ा होगा। यह दूसरी बात है कि अशांति के प्रायोजक, ढाई महीने बाद भी ऐसी सीमित शांति की भी इजाजत आसानी से नहीं दे रहे हैं। इसे किसी भी रूप में समाजवाद के आदर्श से अपना संबंध मानने वाले सभी भारतीय अपने लिए सचमुच शर्म की बात मानेंगे कि अप्रैल के आखिर में अहमदाबाद में कराए अपने शांति मार्च के स्वांग में जार्ज फर्नांडीस ने, दिवंगत जयप्रकाश नारायण के हवाले से गुजरात के अल्पसंख्यकविरोधी नरसंहार के मुख्य प्रायोजक, नरेंद्र मोदी की तारीफों के पुल बांध दिए। समाजवाद का नाम लेने वालों के लिए इससे भी ज्यादा शर्म की बात यह है कि इस सभा में इस (अभूत) पूर्व-समाजवादी ने गुजरात की इस त्रासदी के शिकार हुए लोगों से और जाहिर है कि सबसे बढ़कर अल्पसंख्यकों से, जो हुआ उसे 'भूल जाओ और आगे की सोचो' की मांग ही नहीं की बल्कि वियतनाम पर भयावह अमरीकी अत्याचारों के बावजूद, अब दोनों देशों के बीच सामान्य संबंध कायम होने के हवाले से, उन्हें यह सीख भी दे डाली कि उनके साथ हुए अत्याचार तो बहुत मामूली हैं, फिर वे जो हुआ उसे भूलने से इंकार कर शांति बहाल होने में बाधक क्यों बन रहे हैं?

याद रहे कि इस नरसंहार के कातिलों की सीधे-सीधे रक्षा करनेवाला यह उपदेश इस देश का रक्षा मंत्री ठीक उस समय दे रहा था, जब इस अल्पसंख्यकविरोधी हिंसा को प्रायोजित करने वाले संगठन, जाहिर है कि तलवार, त्रिशूल तथा तेल के बल पर, यह पक्का करने में लगे हुए थे कि जिन मुहल्लों या बाजारों, दूकानों या रोजगारों और गांवों से भी मुसलमानों को खदेड़ दिया गया है, वे वापस न लौट सकें। इतना ही नहीं, राहत शिविरों के नारकीय हालात से निजात पाने तथा सामान्य जिंदगी की तलाश में इक्का-दुक्का तौर पर लौटने की कोशिश करने वालों को, जगह-जगह